

अध्यक्ष की टिप्पणी

प्रिय सहयोगियो,

अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण कर लेने पर यह मेरा विशेषाधिकार बनता है कि मैं यह स्तंभ लिखूँ तथा केंद्र पर हुए कुछ नवीनतम समाचारों तथा विकासों के बारे में प्रस्तुत करूँ ।

हमारे संकायों ने अपने आविष्कारों तथा अन्वेषणों के द्वारा विज्ञान में उत्कृष्टता प्राप्त कर ली है। अपने ही बीच में भारत तथा विदेश के संस्थानों के बीच में स्पंदनात्मक अनुसंधानात्मक सहयोगों ने हमारी सफलता के लिये बड़ी मात्रा में योगदान दिया है। ऐसा ही एक हाल ही का उदाहरण है—केंद्र ने प्रतिजीवाणुवीय यौगिकों के अनुसंधान एवं विकास तथा उनके औषध निर्माणिय अनुप्रयोगों के लिये इंग्लैंड के सार्वजनिक स्वास्थ्य के साथ समझौता—ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। महत्वपूर्ण रूप से हमारे आविष्कारों तथा अन्वेषणों को अनुप्रयुक्त करा लेने की आवश्यकता रही है। जहाँ हमने बड़ी संख्या में एकास्वाधिकारों (पेटेंटों) को प्राप्त किया है, वहीं पर उनके लिये अनुज्ञप्ति(लाइसेन्स) प्राप्त करने के मार्ग का पता लगाने की आवश्यकता रही है, इस दिशा में हमारा प्रथम नव प्रवर्तन अर्थात् संख्या सूत्र लैब्स प्रा. लि का उद्घाटन किया गया है। यह नव प्रवर्तन देश के भी एक कौशलात्मक क्षेत्र के लिये महत्वपूर्ण अंग है। एक और प्रारंभ भी आरंभिक स्थिति में रहा है तथा मुझे लगता है कि यह तो केवल समय का मामला है कि ये कार्यकलाप आगे विकसित होते रहेंगे। विभिन्न सदस्य देशों के अनुसंधान तथा अन्वेषण के प्रथम परमर्शदाता तथा प्रधान मि डेनिस डंबोइस के नेतृत्व में दि 28 अक्तूबर, 2015 को यूरोपियन यूनियन के प्रतिनिधिमंडल का दौरा हमारे लिये अधिक अंतर्राष्ट्रीय सहयोगों के विकास के लिये एक मौका प्रदान कर सकता है। सचिव, वि प्रौ वि (DST) के हाल ही का दौरा भी उनके साथ केंद्र के कार्यकलापों तथा भविष्य के दिशाओं के बारे में चर्चा करने का मौका उपलब्ध कराता है। इस बीच में हम कर्नाटक में तथा देश के दूर स्थित क्षेत्रों में विज्ञान की लोकप्रियता को बनाये रखने में सक्रिय रहे हैं। इस संदर्भ में शि प्रौ ए (ETU) अपने प्रयत्नों के लिये विशेष उल्लेखीय रहा है।



(दि 9, नवंबर 2015 को डॉ किरण मजुमदार शा को ज ने उ वै अ कें की मानद अधिसदस्यता प्रदान—चित्र में हैं — (बायें से दायें)—प्रो. वी. नागराज, अध्यक्ष, ज ने उ वै अ कें, डॉ किरण मजुमदार शा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बयोकोन लि. बेंगलूरु तथा भारत रत्न प्रो सी एन आर राव, लॉइनस पॉलिंग अनुसंधान प्रोफेसर, ज ने उ वै अ कें)

पच्चीस वर्ष समाप्त कर लेने पर यह केंद्र, अपने आधार—स्तंभ नवोन्मेष तथा पुनरअन्वेषण को विस्तरित कर लेने के मौकों की प्रतीक्षा में अपने अनुसंधानात्मक प्रयासों में आगे बढ़ने के लिये तैयार हो गया है।

प्रो. वी. नागराज

अध्यक्ष, ज ने उ वै अ कें

इस अंक में

- समाचार में ज ने कें . . . पृष्ठ 2
- शिक्षा प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान अधिक्रमिक . . . पृष्ठ 3
- शैक्षिक एवं विस्तरण कार्यक्रम . . . पृष्ठ 4
- बौद्धिक संपत्ति . . . पृष्ठ 5
- नियुक्तियाँ तथा पुरस्कार . . . पृष्ठ 6
- व्याख्यान एवं बैठकें . . . पृष्ठ 7
- विगत एवं आगामी घटनाएँ . . . पृष्ठ 8



जने कें समाचार

नये अध्यक्ष द्वारा कार्यग्रहण

यह उत्साहवर्धक विषय रहा है कि दि 14 अक्तूबर 2015 को केंद्र के अध्यक्ष के रूप में प्रो वी नागराज ने कार्यग्रहण कर लिया है। दि 19 अक्तूबर 2015 को प्रो सी एन आर राव तथा प्रो वी नागराज द्वारा प्रो के एस नारायण (प्रभारी अध्यक्ष) को प्रभारी अध्यक्ष के रूप में उनके योगदानों के लिये बधाइयाँ दी गईं।

डॉ. किरण मजुमदार शा को मानद अधिसदस्यता

दि 9 नवंबर 2015 को एक समारोह में डॉ किरण मजुमदार शा, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, बयोकाँन लि. बंगलूरु को ज ने उ वै अ कें की मानद अधिसदस्यता प्रदान की गई।

पेट्रा III के नोडल संस्थान के रूप में ज ने उ वै अ कें

प्रमुख इंडो-जर्मन सहयोगात्मक परियोजना में भारतीय विज्ञानियों के प्रतिभागिता के विकास के लिये एक नोडल-संस्थान के रूप में ज ने उ वै अ कें उभर आया है। प्रो सी एन आर राव की अध्यक्षता में नानो मिशन परिषद, वि प्रौ वि, भारत सरकार के तत्वावधान में यह भारत के सिंक्रोट्रॉनिक समुदाय के लिये एक प्रमुख सूत्रपात रहा है।



चित्र में हैं-डॉ कौस्तुव सन्याल (आखिरी पंक्ति में बाये से दूसरे) के साथ आण्विक कवक विज्ञान प्रयोगालय के अनुसंधानकर्ता।



दि 11 अक्तूबर 2015 को गोवा में डेसी स्टीयरिंग समिति की बैठक में IV भारत का समूह फोटो।

आण्विक कवक विज्ञान प्रयोगालय के दशकोत्सव का समारोह

दि 26 अक्तूबर 2015 को ज ने उ वै अ कें पर आण्विक कवक विज्ञान प्रयोगालय ने अपने 10वें वार्षिकोत्सव मनाया। डॉ कौस्तुव सन्याल के पर्यवेक्षण में 12 सदस्यों से युक्त यह प्रयोगालय अपना ध्यान अनेक मानव रोगजनक खमीरों में H3 परिवर्तकों द्वारा न्यूनतमसूत्री सूचीक्रम पर केंद्रीकृत करता है। विगत दशक के दौरान इस प्रयोगालय में कुल 55 अनुसंधानकर्ताओं को प्रशिक्षित किया गया है। पाँच PhD छात्रों को उपाधियाँ प्रदान की गई हैं जिनमें से तीन छात्रों ने जैविकीय विज्ञान में अत्युत्तम शोध प्रबंध के लिये पुरस्कार प्राप्त किया। इस समारोह में, अध्यक्ष, MBGU के संकाय सदस्यों तथा वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी उपस्थित रहे।

समाचार में ज ने कें

भा वि सं के प्रो नागराज, ज ने उ वै अ कें के अध्यक्ष के रूप में कार्य-ग्रहण किया है।

प्रो वलकुंज नागराज ने भारतीय विज्ञान संस्थान (IISc) के सूक्ष्म एवं कोशिका जैविकी विभाग से अंतर्शाखीय अनुसंधानात्मक संस्थान-ज ने उ वै अ कें (JNCASR) के अध्यक्ष के रूप में कार्यग्रहण किया। प्रो नागराज की नियुक्ति भारत सरकार की संसदीय नियुक्ति समिति द्वारा स्वीकृत की गई, तथा संस्थान के अंतरिम प्रभारी अध्यक्ष प्रो के एस नारायण से कार्य-ग्रहण प्राप्त किया।

स्रोत : टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 14 अक्तूबर, 2015.

एबोला औषधि का संबंध बंगलूरु से है

इंग्लैंड सार्वजनिक स्वास्थ्य (पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड) द्वारा वैश्विक रूप से 20 अभ्यर्थियों को चयनित करने के नौ महीनों के बाद ज ने उ वै अ कें के दो औषधि-अभ्यर्थियों को लघु-सूची में रखा गया तथा उनमें से एक को अंतिम तीन में से चयनित किया गया। इंग्लैंड की सरकार के स्वास्थ्य निकाय ने औषधि के सह-विकास हेतु ज ने उ वै अ कें के साथ समझौता-ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। डॉ जयंत हल्दर तथा उनके दो छात्र-चंद्रधीश घोष एवं मोहिनी मोहन

कोनै-ज ने उ वै अ कें के अनुसंधानकर्ता रहे हैं।

स्रोत : एबोला औषधि का संबंध बंगलूरु से है - टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 09 सितंबर, 2015।

अनाकारीय घन-पदार्थ ; आबद्ध काच(नेचर फ़िजिक्स में समाचार एवं दृष्टिकोण)

काची पदार्थ अनाकारीय घन पदार्थ होते हैं-उनकी संरचना द्रव-समान होती है परंतु वे प्रवाहित नहीं होते। काच पारगमन के प्रति उनके तापमान में वृद्धि कर दें तो दस या उससे अधिक श्रेणी की उच्चता के साथ उनकी श्यानता सुगमता से वर्धित होती जाती है। एक विशिष्ट तापमान पर उनके बहाव में



जने कें समाचार

कोई भी असततता का परिवर्तन नहीं होता—जिसे स्फटिकीकरण के साथ देखा गया है—साथ ही संरचना में भी असततता का परिवर्तन नहीं होता। यह काचों के प्रति अन्वयन हेतु स्फटिकीकृत पदार्थों की घनता की कठिनता का स्पष्टीकरण देता है। परंतु अब नेचर फिजिक्स में लिखते हुए, के हीमा नागमानसा एवं सहकर्मियों ने यह उल्लेख किया है कि कलीलिय नमूनों के साथ के प्रयोग यह प्रकट करते हैं कि काच—पारगमन के निकट वे सूक्ष्म संरचनात्मक प्रभाव उत्पन्न करते हैं जो यह सुझाता है कि काचों की घनता के स्पष्टीकरण के लिये संभाव्य संरचनात्मक तंत्रात्मकता होती है।

स्रोत; एरिक आर वीक्स, अनाकारीय घन पदार्थ; आबद्ध काच, नेचर फिजिक्स 11, 381—382(2015)

सतर्क रहे, हिमालय में अभी संचलन पूरी नहीं हुआ है; प्रो सी पी राजेंद्रन द्वारा रिपोर्टित समाचार

अप्रैल 25 को 7.8 परिमाण के नेपाल का भूकंप, 1934 में 8.2 परिमाण के नेपाल—बिहार के बाद का अत्यधिक बुरा भूकंप रहा है जिसने उत्तर बिहार के मैदान को विनष्ट कर दिया था। 1934 के भूकंप के बाद बिहार का दौरा करते हुए महात्मा गांधी ने लिखा था कि “यह अस्पर्शता के निवारण के लिये भारत की असफलता का दैवीकृत प्रतिशोध है”। गांधी जी के हरिजन के लिये एक पत्र के प्रत्युत्तर में रवींद्रनाथ ठाकूर को यह सुझाते हुए कि “भौतिक महाविपत्तियों का मूल स्रोत भौतिकीय तथ्यों में होगा”।

स्रोत; एशियन एज, मई 03, 2015.

ज ने उ वै अ कें के परिसर में मूल प्रारंभ(आविर्भाव) करने से उत्पादों के उत्तेजन के लिये उद्योगों की सहायता होगी

अपने 26 वें वर्ष में ज ने उ वै अ कें के परिसर में अंततः आविर्भाव प्रविकसित होने लगा है। इसके प्रधान होंगे—इंटेल् लैब के पूर्व निदेशक, समानांतर संगणना अनुसंधानकर्ता सुनील शर्लेकर—जिसने सस्केन के प्रमुख प्रौद्योगिकी अधिकारी के रूप में कार्य किया है तथा टाटा संगणनात्मक अनुसंधान प्रयोगालय में अनुसंधान के निधियन प्रमुख थे। संतोष अंशुमाली, ज ने उ वै अ कें के एक संकाय सदस्य है जो इस स्टार्टप (आविर्भाव) के पीछे के एक मस्तिष्क के रूप में है जिन्होंने वैज्ञानिक अनुरूपणों के क्षेत्र में अपने अनुसंधान को आधार बना लिया है। उनके पूर्व सहयोगी (सहकर्मी) स्विस विज्ञानी सत्वाटोर अर्सिडियाकोनो भी इस स्टार्टप के अंग होंगे।

स्रोत; टाइम्स ऑफ इंडिया, 04, अगस्त, 2015

विज्ञानी ने जैव अपकर्षी प्रक्षालक का अन्वेषण किया है

नगरस्थित एक विज्ञानी तथा ज ने उ वै अ केंद्र के उनके दल ने ऐसे जैव अपकर्षी प्रक्षालक का अन्वेषण किया है जो विषाक्त फेन के संचयन का कारण नहीं बनाता। सामान्य रूप से प्रयुक्त प्रक्षालक अजैव अपकर्षी होते हैं। डॉ जयंत हल्दर तथा उनका छात्र जियाउल हक ने विदलन सतही सक्रिय अभिकरण की इस श्रेणी का विकास किया है।

स्रोत; द न्यू इंडियन एक्सप्रेस, 15, मई, 2015

शिक्षा प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान अधिक्रमिक

स्कूलों तथा कॉलेजों के विद्यार्थियों के बीच में तथा विज्ञान में स्नातक कार्यक्रमों का अनुसरण करनेवाले विद्यार्थियों के बीच में विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के मिशन(कार्यलक्ष्य) का जारी रखते हुए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

दि 28 मई तथा 3 जून 2015 को POCE के

छात्रों को 'नानो जगत' तथा 'रासायनिकी को समझना' के CD रॉमों से बहुमाध्यमीय प्रस्तुतीकरण किये गये।

दि 30 जून 2015 को विज्ञान अधिक्रमिक कार्यक्रम के तत्वावधान में CNR राव हॉल ऑफ साइन्स तथा शि प्रौ ए(ETU) ने शिक्षक—छात्र कार्यक्रमों/कार्यशालाओं का संचालन किया। इस वर्ष CNR राव शिक्षा संस्थापन के सहयोग में ज ने उ वै अ केंद्र ने रासायनिक शिक्षा में राष्ट्रीय पुरस्कार(AVRA प्रयोगालय—हैदराबाद द्वारा दानित) प्रो उदय मित्रा, भा वि सं, बेंगलूरु को प्रदान किया। CNR राव शिक्षा संस्थापन द्वारा प्रायोजित वर्ष 2014 के उत्कृष्ट विज्ञान शिक्षक के पुरस्कार प्राप्तकर्ता — श्रीमती मीनु वाध्वा, केंद्रीय विद्यालय विज्ञान विहार, दिल्ली, तथा श्री प्रकाश रामचंद्र गरगट्टी, पंडित जवाहरलाल नेहरू हाइस्कूल, गोकाक तालुक, बेलगांव जिला, कर्नाटक रहे हैं। पुरस्कार समारोह के उपरांत एक व्याख्यान कार्यक्रम हुआ, जिसमें लगभग 220 विद्यार्थी तथा शिक्षक उपस्थित रहे तथा एक व्याख्यान—प्रो. उदय मित्रा(भा वि सं, बेंगलूरु) द्वारा 'रासायनिकी साथ मजा'— विषय पर हुआ तो दूसरा व्याख्यान — प्रो. उत्पलनाथ(भा वि सं, बेंगलूरु) द्वारा 'जैविकी में आकार—प्रकार का नियंत्रण किया जाता है' — विषय पर हुआ।

दि 13—16 जुलाई 2015 को एक विज्ञान अभिमुखी कार्यशाला, जवाहर नवोदय विद्यालय के विद्यार्थियों के लिये आयोजित की गई तथा कर्नाटक भर के विद्यालयों के कक्षा XI के विद्यार्थियों के लिये संचालित की गई।

NCU तथा CPMU के नये छात्रों के लिये एक अभिमुखी कार्यक्रम में 'रासायनिकी का संक्षिप्त इतिहास(महान अग्रदूत)' विषय पर प्रो CNR राव ने विद्यार्थियों को संबोधित किया।

अगस्त के महीने में एक और कार्यक्रम — 'छात्रों के लिये भौतिकी में कार्यक्रम' कक्षा XI तथा XII के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिये आयोजित किया गया। प्रो जयंत मूर्ति, प्रो S M शिवप्रसाद, तथा डॉ उर्बसी सिन्हा ने



ज ने कें समाचार

व्याख्यान दिये तथा प्रदर्शन प्रस्तुत किये। दि 24 अगस्त 2015 को लगभग 190 विद्यार्थियों ने तथा शिक्षकों ने 'जैविकी में कार्यक्रम' में भाग लिया, जिसमें जैविकी के विभिन्न तीन विषयों पर व्याख्यान दिये गये, जिसके अंत में वक्ता के साथ प्रश्नोत्तरी के अंतर्क्रियात्मक सत्र हुआ। सितंबर 2015 के महीने में 'रासायनिकी में एक कार्यक्रम' कक्षा XI तथा XII के विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिये संचालित किया गया।

'रासायनिकी में महान अग्रदूतों के जीवन तथा काल' नामक एक पुस्तक जो प्रो CNR राव तथा डॉ इंदुमती राव द्वारा रचित (लावोसाइर से संगत तक) है—का प्रकाशन 'वर्ल्ड साइंटिफिक पब्लिशर्स' द्वारा किया जाता है।

शैक्षिक कार्यकलाप;

उपाधि कार्यक्रम

वर्ष 2015-16 के अगस्त के प्रवेशों के दौरान 63 छात्रों ने प्रवेश लिया तथा वर्ष 2014-15 के जनवरी के प्रवेशों के दौरान, विभिन्न उपाधि कार्यक्रमों के अधीन 10 छात्रों ने प्रवेश लिया।

नये छात्रों के लिये दि 3 अगस्त 2015 को एक अभिमुखीकरण कार्यक्रम हुआ।

वर्तमान में, ज ने उ वै अ केंद्र पर छात्रों की संख्या 313 रही है। इस अवधि के दौरान, 29 PhD] MS(अभि.) तथा 17 MS(समेकित PhD) उपाधियां प्रदान की गई हैं।

MS(अभि/अनुसंधान) तथा PhD कार्यक्रमों के लिये वर्ष 2015-16 के जनवरी के प्रवेशों के संबंध में विज्ञापन हमारे वेबसाइट पर प्रकाशित किया गया है। दि 06 नवंबर 2015 तक आवेदन पत्र हमारे वेबसाइट—www-jncasr-ac-in@admit में उपलब्ध है।

डिप्लोमा कार्यक्रम

पदार्थ-विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा में तीन छात्रों ने प्रवेश लिया है; वे सद्यतः अपने पाठ्यक्रम के कार्यकर रहे हैं। वे अपने

पाठ्यक्रमों की अपेक्षाओं को जुलाई 2016 तक पूरा कर लेंगे। वे अपने पाठ्यक्रमों की अपेक्षाओं को सफलतापूर्वक पूरा कर लेने के बाद उन्हें केंद्र का स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रदान किया जाएगा।

अधिसदस्यताएं तथा विस्तरण कार्यक्रम

नई पहल — छात्र मैत्रिक विस्तरण कार्यक्रम;

इस कार्यक्रम के अधीन, कक्षा XI/XII के विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाता है जो निर्धारित अनुसंधान दल में ज ने उ वै अ केंद्र में कार्यकलापों तथा प्रयोगों का वीक्षण करते हुए एक दिन बितायेंगे। प्रत्येक आगंतुक छात्र के लिये ज ने उ वै अ केंद्र के समेकित PhD/PhD छात्रों/ डाक्टोत्तर छात्रों में से एक मैत्रिक छात्र को नियत किया जाएगा। यह कार्यक्रम प्रत्येक महीने में 25 छात्रों के लिये अक्तूबर तथा जनवरी के बीच में चलेगा।

औपचारिकरूप से, यह कार्यक्रम सोमवार दि 19 अक्तूबर 2015 को प्रो CNR राव द्वारा प्रारंभ किया गया। जवाहर नवोदय विद्यालय, दोड्डबल्लापुर के पच्चीस विद्यार्थियों ने भाग लिया तथा ज ने उ वै अ केंद्र के 25 मैत्रिक छात्रों तथा संकायों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया।

चल रहे कार्यक्रम ;

आगंतुक

अधिसदस्यता कार्यक्रम

2015-16 के सत्र के लिये देशभर के अनुसंधान संस्थानों से 13 विज्ञानियों का चयन किया गया। उन्हें MBGU, CPMU तथा TSU में नियोजित किया गया।

ग्रीष्म अनुसंधान

अधिसदस्यता कार्यक्रम

SRFP(ग्रीअअका)—2015 सफलतापूर्वक पूरा किया गया। 69 विद्यार्थियों ने छात्रवृत्ति प्राप्त की तथा उन्होंने बेंगलूरु में तथा देश के अन्य भागों में भौतिकी, रासायनिकी, जैविकी या अभियांत्रिकी के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधानात्मक प्रशिक्षण प्राप्त किया। वर्ष 2015 के लिये 13 विद्यार्थियों को राजीव गांधी अधिसदस्यता प्रदान की गई,

SRFP—2016 कार्यक्रम के आवेदनों के आमंत्रण के लिये नवंबर 2015 में विज्ञापन जारी किया जाएगा।

परियोजना अभिमुखी जैविकी शिक्षा (POBE—पअजैशि) तथा परियोजना अभिमुखी रासायनिकी शिक्षा (POCE—पअराशि)

POBE—POCE 2015 कार्यक्रम जून 2015 में प्रत्येक शाखा में 10-10 विद्यार्थियों के साथ प्रारंभ किया गया। POBE—POCE 2013 एवं 2014 के प्रवेश प्राप्त विद्यार्थी क्रमशः अपने तृतीय तथा द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षण के लिये वापस आ गये हैं। सभी आगंतुक विद्यार्थियों के लिये दि 13 मई 2015 को एक अभिमुखीकरण कार्यक्रम प्रारंभ किया गया जिसमें SRFP, POCE तथा POBE



छात्र मैत्रिक कार्यक्रम 19 अक्तूबर 2015

चित्र में — ज ने उ वै अ केंद्र के एक मैत्रिक छात्र के साथ प्रयोगालय के कार्यकलाप में जवाहर नवोदय विद्यालय से भाग लेती हुई एक छात्रा।



ज ने कें समाचार

सम्मिलित हैं। POBE/POCE 2015 का उद्घाटन भाषण प्रो CNR राव द्वारा 02 जुलाई 2015 को दिया गया, जिसमें POBE/POCE तथा SRPF की सभी शाखाओं के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

वर्ष 2013 बैच के POBE/POCE के उन विद्यार्थियों को –जिन्होंने अपने प्रशिक्षण को पूरा किया था – जैविकी या रासायनिकी जो भी अन्वय होता हो उन विषयों में डिप्लोआ, प्रो K S नारायण, प्रभारी-अध्यक्ष द्वारा दि 01 जुलाई 2015 को प्रदान किया गया।

JNCASR-CICS (विज्ञान में अंतर्राष्ट्रीय सहकार केंद्र) अधिसदस्यता कार्यक्रम

JNCASR-CICS अधिसदस्यता कार्यक्रम 2015-16 के अधीन निम्न देशों अर्थात् नाइज़िरिया, उज़बेकिस्तान, इथोपिया, श्रीलंका, ज़ाबिया तथा कैमरून के छह विज्ञानियों को चयनित किया गया तथा अगले एक वर्ष के दौरान निर्धारित प्रयोगालयों में प्रवेश होने की प्रतीक्षा रही है। आवेदनों के आमंत्रित करने हेतु विज्ञापन जारी कर दिया गया है।

बौद्धिक संपत्ति

ज ने उ वाय अ कें ने यू के के स्वास्थ्य विभाग के एक कार्यपालक अभिकरण, पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड (PHE) के साथ एक समझौता ज्ञापन कर लिया है। यह सहयोग उन यौगिकों के अनुसंधान एवं विकास से संबंधित है जिसमें सुगंधित मूलतत्व और/अथवा वसासंबंधी(अलिपैथिक)मूलतत्व, लवणीय आम्ल(अमाइन) तथा अमिनोआम्ल अर्धांश(श्रेणी 1 यौगिक) और/अथवा बहु अमाइन आधारित प्रति सूक्ष्मजीवाणुवीय संयोजक (श्रेणी 2 यौगिक) से युक्त होते हैं साथ ही जिसमें उनके प्रति-सूक्ष्मजीवाणुवीय गुणधर्मों सहित उनके औषधीय अनुप्रयोगों के वाणिज्यिकरण के परीक्षण, मूल्यांकन तथा संभाव्यता भी सम्मिलित हैं।

प्रदत्त एकास्वाधिकार (पेटेंट)

केंद्र ने तीन एकास्वाधिकार(पेटेंट) (यूरोप-2, चीना-1) प्राप्त किये हैं।

- यूरोपीय एकास्वाधिकार(पेटेंट) (सं 2585015) जो प्रो कवास्सेरी नारायण सुरेश्वरन तथा अन्यो द्वारा विकसित 'कृत्रिम अक्षिपटल साधन' के लिये जारी किया गया है।
- डॉ जयंत हल्दर तथा अन्यो द्वारा विकसित 'धनायनी प्रति सूक्ष्मजीवाणुवीय संयोजन(रचना)' के अन्वेषण के लिये यूरोपीय पेटेंट कार्यालय से पेटेंट पदान करने की अनुमति की सूचना प्राप्त हो गई है।
- प्रो रोहम नरसिंह तथा अन्यो द्वारा विकसित 'पंख आखडित ट्रेक्टर रोटर्स द्वारा चालित विमान(वायुयान) के पंख की प्रेरणा या कुल व्यास की घटौती के लिये अनुकूलतम पंख योजना रूप(प्लैनफार्म)' अन्वेषण के लिये चीनी पेटेंट कार्यालय से पेटेंट प्रदान करने की अनुमति की सूचना प्राप्त हो गई है।

प्रस्तुत किये गये पेटेंट आवेदन;

निम्न अन्वेषणों के लिये छह भारतीय अनंतिम पेटेंट आवेदन प्रस्तुत किये गये हैं

- डॉ तपसकुमार माजी तथा अन्य।
- प्रो गिरिधर उडपी राव कुलकर्णी तथा अन्य (2 अन्वेषण)
- प्रो गोविंदराजु तिममय्या तथा अन्य (2 अन्वेषण)
- डॉ जयंत हल्दर तथा अन्य

नौ अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आवेदन(यूएसए-2, यूरोप-1, चीन-1, जापान-1, ऑस्ट्रेलिया-1, केनडा-1, हांग कांग-1, ब्राज़ील-1) प्रस्तुत किये गये हैं-

- 'संयोजन, उपस्तर तथा उसकी पद्धतियां - प्रो गिरिधर उडपी राव कुलकर्णी तथा अन्यो द्वारा विकसित, आवेदन यूएसए में प्रस्तुत।
- 'प्रतिसूक्ष्मजीवाणुवीय यौगिक, उनके संश्लेषण तथा उनके अन्वयन' - डॉ जयंत हल्दर तथा अन्यो द्वारा



चित्र में (बायें से दायें) - मि डंकन सेल्बी, मुख्य कार्तपालक, PHE, प्रो CNR राव, प्रो K S नारायण, प्रो S S वासन, PHE, (आखिरी पंक्ति में) मि AN जयचंद्र, व प्र अ, ज ने उ वै अ कें, तथा डॉ जयंत हल्दर, NCU, ज ने उ वै अ कें।



जने कें समाचार

विकसित, तथा यूएसए, यूरो, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, केनडा, हांग कांग में आवेदन प्रस्तुत।

प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण

डॉ जयंत हल्दर के तीन अन्वेषण – अर्थात् (1) प्रतिसूक्ष्मजीवाणुवीय यौगिक, उनके संश्लेषण तथा उनके अन्वयन, (2) प्रतिसूक्ष्मजीवाणुवीय संयोजक, उत्पादन की पद्धति, तथा उनके उपयोग को यूके स्वास्थ्य विभाग के एक कार्यपालक अभिकरण-पब्लिक हेल्थ इंग्लैंड को हस्तांतरित तथा (3) प्रतिजीवाणुवीय यैगिकों के नानोकण संयोजन तथा उनके अन्य उपयोग – को मेसर्स राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम, DSIR, वि प्रौ मंत्रालय, भारत सरकार का एक उद्यम को हस्तांतरित।

नई नियुक्तियां तथा पदोन्नतियां

संकाय अधिसदस्य

डॉ T N C विद्या (संकाय अधिसदस्य)

पदोन्नतियां

सहयोगी प्रोफेसर :

डॉ जयंत हल्दर

डॉ श्रीधर राजाराम

डॉ राजेश गणपति

आगंतुक छात्र

1. मि सिद्धार्थ गुप्ता
2. मि रचित सरन
3. सुश्री अत्रेय बैनर्जी
4. सुश्री संजुक्त कृष्णगोपाल
5. मि अर्जुन शर्मा
6. मि अल्फ्रे जॉन
7. सुश्री प्रीति
8. सुश्री अमरीन बानो
9. सुश्री सेग्रियो ब्रूनो
10. सुश्री सिल्विया इला टुसेट

आगंतुक विज्ञानी

1. डॉ बासित अबूबकर
2. डॉ इर्शाद अहमद
3. डॉ तकरी अहमद
4. डॉ माधवेंद्र नाथ त्रिपाठी
5. डॉ वर्मा हेमंत रामबरन

अनुसंधान सहयोगी (अनंतिम)

1. श्री S R K चैतन्य शर्मा वाई
2. सुश्री सुनीता
3. मि सैकत दैबनाथ
4. मि शेदटी रोनाक कुट्टी
5. मि गंगय्या मेट्टाला
6. सुश्री हिमांशु चक्रबोर्ती

अनुसंधान सहयोगी

1. डॉ दीप्ति चुग
2. डॉ ए मुत्तुविनायगम
3. डॉ मालिनी एस पिल्लै
4. डॉ सैकिशन सूर्यनारायण
5. डॉ आई फक्रुद्दिन
6. डॉ के आनंदसब्री

पुरस्कार एवं सम्मान

डॉ इंदुमती राव

राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी के अधिसदस्य के रूप में चयनित।

प्रो अनुरंजन आनंद

भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी(INSA) नई दिल्ली के अधिसदस्य के रूप में चयनित।

प्रो तपस कुमार कुंडु

डॉ नित्यानंद चर्मदाय व्याख्यान/ पुरस्कार (2015) भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, नई दिल्ली।

आण्विक औषधि के विशेष केंद्र में सहयोग संकाय, ज ने वि वि, नई दिल्ली (2015-2020)।

प्रतिष्ठित आगंतुक प्रोफेसर, श्री देवराज अर्स उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान अकादमी, कर्नाटक(2015)।

आगंतुक प्रोफेसर, जैविकी विज्ञान विभाग, भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, कोलकता(2015)।

औषधि-निर्माणिय रासायनिक विभाग के परामर्शी मंडल के सदस्य, आचार्या तथा B M रेड्डी फार्मसी कॉलेज, बेंगलूरु(2015)। जैविकीय रसायनबिंद संघ के उपाध्यक्ष(भारत), (2015-2016)।

डॉ सेबास्टियन सी पीटर

MRSI (भारत की पदार्थ अनुसंधान सोसाइटी) के वर्ष 2016 के लिये पदक के लिये चयनित।

डॉ सुबी जॉर्ज

रासायनिकी में वर्ष 2015 के लिये NASI-SCOPUS युवा विज्ञानी का पुरस्कार प्राप्त किया है।

डॉ कनिष्क बिस्वास

वर्ष 2015 के लिये जागतिक विज्ञान अकादमी(TWAS) के युवा संबंधन के रूप में चयनित।

रासायनिक विज्ञान में राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी(NASI) के युवा(प्लैटिनम) वज्रमहोत्सव पुरस्कार के लिये चयनित।

युवा विज्ञानी अनुसंधान पुरस्कार, DAE-BRNS, इंडिया(2015)।

डॉ रंजनी विश्वनाथ

भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान युवा अकादमी(INYAS) के निधियन सदस्यों में से एक के रूप में चयनित जो INSA के आश्रय के अधीन एक युवा अकादमी है।

अत्यंत मूल्यवान कर्मचारी सदस्य पुरस्कार

वर्ष 2015 के लिये मि H S सीताराम शर्मा, वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक को 'अत्यंत मूल्यवान कर्मचारी सदस्य' पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया है।

केंद्र को अत्युत्तम अलंकारिक/वनस्पति उद्यान पुरस्कार

केंद्र ने अत्युत्तम अलंकारिक/वनस्पति उद्यान



जने कें समाचार

पुरस्कार के लिये मैसूर बागबानी सोसाइटी, लालबाग, बेंगलूरु द्वारा स्थापित समेकित पुरस्कार प्राप्त किया है। यह पुरस्कार दि 14 अगस्त 2015 को एक समारोह में प्रदान किया गया।

व्याख्यान एवं बैठकें

चर्चा बैठकें

- 19वीं वि प्रौ वि(DST) कार्यक्रम परामर्शी समिति(PAC) बैठक, 20 मई, 2015.
- पदार्थ विज्ञान में सीमांत, ज ने उ वै अ कें तथा SSCU(भा वि सं), 15-18, जून 2015.
- MCB75:अणुओं से जीवियों तक, प्रो उमेश वाश्ने, भा वि सं, 11-14 दिसंबर 2015.
- रासायनिकी विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के लिये JNCASR-FCBS कार्यशाला, प्रो M V जॉर्ज, NIIST, तिरुवनंतपुरम, 15-17, अक्तूबर 2015.
- भारतीय पाचक संघ संगोष्ठी (IPS-2015), डॉ T गोविंदराजु, NCU, ज ने उ वै अ कें, 24-25, सितंबर 2015.
- गणितीय जैविकी पर कार्यक्रम, डॉ कविता जैन, TSU, ज ने उ वै अ कें, 7-11, सितंबर 2015.
- रासायनिक सीमांत 2015, प्रो R मुरुगवेल, IIT, मुंबई, 15-18, अगस्त 2015.
- उन्नत पदार्थों में सीमांत, डॉ रंजनी विश्वनाथ, NCU, ज ने उ वै अ कें, 15-18, जून 2015.

धर्मदाय व्याख्यान

रासायनिकी में । ट राम राव संस्थापन व्याख्यान;

'कक्ष-तापमानात्मक ऑयनिक द्रवों में आण्विक प्रणालियों के प्रतिदीप्ति-व्यवहार से हम क्या सीख सकते हैं?' प्रो अनुनय सामंत, रासायनिकी स्कूल, हैदराबाद विवि, हैदराबाद :

पुरस्कार व्याख्यान; 'जैविकीय अनुप्रयोग के लिये कार्यात्मक जैविक अणु' - डॉ D रामय्या, निदेशक, CSIR, उत्तरपूर्व वि एवं प्रौ संस्थान, जोर्हाट, आसाम, 21 मई 2015।

भौतिकी में DAE (परूवि) राजा रामण्णा व्याख्यान

'सममितियां एवं विश्व का जन्म' प्रो संदीप त्रिवेदी, निदेशक TIFR, मुंबई। पुरस्कृत व्याख्यान: 'प्रथम सिद्धांत विद्युत्मानवीय संरचना परिकलनों से पदार्थ नमूनन', प्रो तनुश्री शाहा दासगुप्ता, संघनित पदार्थ भौतिकी एवं पदार्थ, विज्ञान विभाग, एस एन बोस राष्ट्रीय मूलभूत विज्ञान केंद्र, कोलकता, 24 सितंबर 2015।

प्रो वी रामलिंगस्वामी व्याख्यान

'21वीं शताब्दी में जैविकीय विज्ञान के लिये नव ढांचा: परिवर्तन भूगोल तथा जैविकी की भाषा', प्रो सत्यजीत मेयर, राष्ट्रीय जैविकीय विज्ञान एवं inSTEM (नलिका कोशिका) केंद्र, बेंगलूरु, 27 जुलाई 2015।

प्रो C N R राव वक्तृता पुरस्कार

व्याख्यान;

'नवल संरचनाओं का सैद्धांतिक पूर्वानुमान तथा घन पदार्थों में परिघटनाएं: आधुनिक प्रौद्योगिकी के पीछे मूलभूत विज्ञान', प्रो उमेश वाघ्मारे, TSU, ज ने उ वै अ कें, 04 अगस्त 2015।

डार्विन व्याख्यान 2015

'विकास कैसे पूर्वानुमानात्मक है?' प्रो जोयधिम क्रूग, सैद्धांतिक भौतिकी संस्थान, कोलेन विवि, 15 सितंबर 2015।

इस्रो सतीश घवन व्याख्यान

'भारतीय कृषि: अपेक्षा का एकत्रीकरण', डॉ S अय्यप्पन, महानिदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, 02 नवंबर 2015।

विशेष व्याख्यान

5वीं वार्षिक पदार्थ व्याख्यान

'प्रकाश के उपयोग द्वारा द्विआयामीय नानो पदार्थों को समझलेना', प्रो A K सूद, भौतिकी विभाग, भा वि सं, बेंगलूरु, 12 जून 2015।

चर्चागोष्ठी / कार्यशालाएं / सम्मेलन

- कॉमसॉल कार्यशाला, कॉमसॉल इंक द्वारा आयोजित, 12 मई 2015
- 'जैवप्रेरणा' पर अनुषंगी बैठक, लंडन में रॉयल सोसाइटी लंडन द्वारा 'दार्शनिक व्यवहारों की प्रथम वैज्ञानिक पत्रिका की 350 वें वार्षिक समारोह में आयोजित, सह-अध्यक्ष डॉ T गोविंदराजु, NCU, ज ने उ वै अ कें, 27 मई 2015।
- BD-JNCASR बहाव कोशिका मिति कार्यशाला, BD जैव विज्ञान, 08-10 जून 2015।
- आधारभूत बहाव कोशिका मिति पर कार्यशाला, प्रो रंग उदयकुमार, MBGU, ज ने उ वै अ कें द्वारा आयोजित 17-18 जून 2015।
- सहयोगात्मक अनुसंधान के उन्नयन हेतु JNCASR-İKST संयुक्त कार्यशाला, प्रो उमेश वाघ्मारे, TSU, ज ने उ वै अ कें तथा डॉ सेयुंग चोयल ली, R-D निदेशक, İKST(इंडो-कोरिया वि. प्रौ. केंद्र) द्वारा आयोजित 21 जुलाई 2015।
- नेशनल कॉलेज, बसवनगुडी के विद्यार्थियों के लिये एक दिवसीय संगोष्ठी -सह-प्रयोगालय दौरा कार्यक्रम, प्रो चंद्रभास नारायण, CPMU, ज ने उ वै अ कें द्वारा आयोजित किया गया, 08 अक्तूबर 2015।
- 'भारतीय मानसून वर्षा का विश्लेषण: समयश्रेणीय संख्यिकीय अभिगम', डॉ सरिता आज़ाद, भा प्रौ सं मंडी, 08 अक्तूबर 2015।
- 'संघनित पदार्थ भौतिकी में वर्धनात्मक वैश्व मानपरिघटना पर सम्मेलन', डॉ सुबीर K दास, TSU, ज ने उ वै अ कें द्वारा आयोजित 08-10, 2015।

संगोष्ठियां

- रोगजननीयता में HIV-1 के नियंत्रणात्मक एवं अनुषंगी प्रोटीनों का पात्र- डॉ अखिल बैनर्जी, राष्ट्रीय



जने के समाचार

रोगनिरोधकता संस्थान, नई दिल्ली, 7 मई 2015।

2. प्रबलता से अन्योन्यात्रित विद्युदणु प्रणालियों में हबर्ड U तथा हंड्स नियम पर प्रबल संकरण प्रभाव— डॉ शुभ्रसेन गुप्ता, 19 जून 2015।
3. ऑक्साइड-अंतरापृष्ठों पर द्वि-आयामीय विसरणशील धातुओं में प्रमात्रा प्रावस्थाएं तथा प्राबस्या-पारगमन—प्रो R C बुधानी, भा प्रौ सं कानपुर, 24 जून 2015।
4. तिर्यक् समतल टोमोग्राफी के उपयोग द्वारा संपूर्ण मूषिका मस्तिष्क प्रतिबिंबन—कोल्डस्प्रिंग हार्बर लैब, न्यूयार्क, 29 जून 2015।
5. प्रति-अर्बुद चिकित्सा के रूप में IncRNAओं का नियंत्रण: MALAT1 उदा के रूप में—डॉ गायत्री अरुण, कोल्ड स्प्रिंग हार्बर लैब, न्यूयार्क, 30 जून 2015।
6. अर्ध चालक विषय संरचनाओं तथा P, CL से प्रतिस्थानित Cdsओं द्वारा जलजनक उत्पादन के अध्ययन— मि आनंद कुमार राँय, ज ने उ वै अ कें के शेख सौद हॉल(ICMS भवन), 02 जुलाई 2015।
7. कृमि-वर्धन के आकार का अनुमान लगाना: सूक्ष्मांगों(सूक्ष्म जीवियों) से जनसंख्या तक—डॉ श्रावती उप्पलुरी, प्रिन्सटन विवि, 09 जुलाई 2015।
8. प्रकाशीय परिचय के स्थान(स्तर), विशिष्टियों तथा अनुरक्षण का नियंत्रण LhX2 करता है—डॉ अचिरा राँय, समेकित मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र, सीटल बालक अनुसंधान संस्थान, सीटल, वाशिंगटन, यूएसए, 23 जुलाई 2015।
9. विक्षोभ बहाव में जड(अक्रिय) कणों की गतिकी: निधारन तथा संलयन—प्रो स्मरिदी संकर रे, अंतर्राष्ट्रीय सैद्धांतिक विज्ञान केंद्र, टाटा मूलभूत अनुसंधान

संस्थान, TIFR केंद्र भवन, भा वि सं, बेंगलूरु, 08 सितंबर 2015।

10. प्रमात्रा पदार्थ का आविर्भावी अवस्थाएं— प्रो रॉस मेकंजी, क्वीन्सलैंड विवि. ब्रिस्बेन, ऑस्ट्रेलिया, 06 अक्टूबर 2015।
11. मृदु पदार्थों के कुछ आश्चर्यकारी तथा मुक्त प्रश्न—प्रो स्टीव गार्निक, उल्सन राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, उल्सन, साउथ कोरिया, 07 अक्टूबर 2015।
12. अ-फेर्मी द्वतों में UV/IR मिश्रण—डॉ इप्सिता मंडल, सम्वनित पदार्थ सिद्धांत, पेरिमीटर संस्थान, केनडा, 15 अक्टूबर 2015।
13. प्राकृतिक अतिथेय परजीवी—प्रणाली में रोग—प्रतिरोधकता तथा सहनशीलता: परिसर विकासवादी चालक तथा सांसारिक रोगों की अर्थव्याप्ति—डॉ गुहा धर्मराजन, IISER, कोलकता, 30 अक्टूबर 2015।
14. स्वास्थ्य तथा रोग में तंत्रिका(नाडी) प्रोटीन संश्लेषण का नियंत्रण—डॉ अदिती भट्टाचार्य, मस्तिष्क विकास तथा दुरस्ती केंद्र, inStem, बेंगलूरु, 29-10-2015।
15. गतिकीय परमाणुवीय ध्रुवीकरण तथा प्रमात्रा ऊष्मीकरण विरोधाभास—प्रो अल्बर्टो रोसो, पैरिक विवि, सुद, ओर्से, फ्रान्स, 03 नवंबर 2015।
16. बिक्षोभ अपरूप बहावों तथा बहाव स्थिरता की संरचना के कुछ पहलुओं का अन्वेषण—डॉ सौरभ सुहास दीवान, इंपिरियल कॉलेज लंडन, यूके, 06 नवंबर 2015।

अन्य कार्यक्रम

स्वास्थ्यता कार्यशाला

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर स्वास्थ्यता कार्यशाला का आयोजन ईशा संस्थापन, बेंगलूरु के सहयोग में 19 जून 2015 किया गया।

हिंदी सप्ताह

हिंदी सप्ताह दि 14-23 सितंबर 2015 के दौरान आयोजित किया गया—जिसमें, हिंदी कार्यशाला, श्री M G सवदती द्वारा; हिंदी मनोरंजन कार्यक्रम Rj Red FM 93.5 द्वारा ; हिंदी क्विज़ तथा हिंदी में वैज्ञानिक भाषण—डॉ D D ओजा, जैपुर द्वारा आयोजित थे। प्रतियोगिताओं में विजेताओं को पुरस्कार तथा प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ में उत्तीर्ण प्रशिक्षार्थियों को प्रमाण-पत्र वितरित किये गये।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

सतर्कता जागरूकता सप्ताह 26-31 अक्टूबर 2015 के दौरान आयोजित किया गया। केंद्र के सभी संकायो, विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों द्वारा दि 27 अक्टूबर 2015 को शपथ लिया गया। दि 29 अक्टूबर 2015 को मि K N नारायण स्वामी, सहायक आरक्षक आयुक्त, नगर विशेष शाखा, बेंगलूरु द्वारा निवारक सतर्कता पर भाषण दिया गया।

आगामी कार्यक्रम

1. शीतकालीन स्कूल 2015, संयोजक : प्रो S N शिवप्रसाद, CPMU तथा प्रो उमेश वाघमारे, TSU, ज ने उ वै अ कें, 5-11 दिसंबर 2015।
2. ज ने उ वै अ कें में वैज्ञानिक अनुसंधान में सीमांतों पर TWAS-ROCASA सम्मेलन, 21-22 दिसंबर 2015।

वार्षिक संकाय बैठक

दि 13 नवंबर 2015 को केंद्र की वार्षिक संकाय बैठक होगी। प्रो N बालकृष्णन, प्रो शोभना नरसिंहन, प्रो K N गणेश, डॉ जयंत हल्दर तथा प्रो V नागराज व्याख्यान देंगे। साय:काल में एक सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जक्कूरु परिसर पर दि 13-14 नवंबर 2015 को एक आंतरिक विचार-गोष्ठी होनेवाली है।